VISION IAS

www.visionias.in

ESSAY

Name of Candidate	Arpit kumar						Test Code				
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number		5	4	6	7	0	5.		
Centre	M.N.	Date	1	9	0	8	2	0	2	3	

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Structure and Flow
3. Dimensional Coverage
4. Language Competence
5. Length of Essays
6. Creativity Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

"किसी कमी के साथ एक हीरा बिना किसी कमी के पत्थर से बेहतर है।"

महानता चाहे जितनी भी बड़ी हो, वह निर्दोष नहीं होती ; उसमें छोटे-मोटे छिद्र रह ही जाते हैं।

महान ग्रीक दार्शनिक लोंजाइनस की ये पंक्तियाँ हमारे निबंध के मर्म को उद्घाटित करती हैं। पत्थर तथा हीरा दोनों प्रकृति का भाग हैं, पत्थर सर्वत्र सुलभ संसाधन है तो वहीं हीरा अत्यंत दुर्लभ। इसी सुलभ-दुर्लभ की आर्थिक व्याख्या के फलस्वरूप हीरे की माँग तथा उसका मूल्य किसी भी अन्य प्राकृतिक संसाधन की तुलना में अधिक है। जहाँ हीरा उच्च ताप व दाब को सहकर निखरता है वहीं पत्थर अपेक्षाकृत सरलता से निर्मित हो जाता है। तो क्या हीरे के दुर्लभ होने से या उसकी कठिन निर्माण प्रक्रिया के कारण उसे कमियों के साथ भी काम्य माना जाना चाहिए ? और काम्य मानने के अलावा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

क्या उसे अवगुण विहीन पत्थर से श्रेष्ठ माना जा सकता है? साथ ही किन कमियों के साथ हीरा स्वीकार्य हो सकता है और किन कमियों के साथ वह त्याज्य की वस्तु है।

हीरा अपनी प्रकृति में सर्वश्रेष्ठ है, हमारे द्वारा गुणी व्यक्ति को भी हीरा कहकर पुकारा जाता है। अक्सर परिवार, समाज तथा राष्ट्र में जो गुणी व्यक्ति है या जो भी संसाधन समाज हित हेतु अत्यंत उपयोगी हैं उसे हीरे की संज्ञा से नवाजा जाता है।

हीरा में कोई कमी न होना काम्य है किंतु दर्शनशास्त्र तथा व्यावहारिक दुनिया में यह स्वीकारा गया है कि कमी रहित होना एक आदर्श की स्थिति है और हम सभी यह जानते हैं कि अगर आदर्श प्राप्य हो जाए तो वह आदर्श नहीं रह जाता है। यही बात निबंध के प्रारंभ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ मत लिखें।)

में ग्रीक दार्शनिक लोंजाइनस की पंक्तियाँ भी स्थापित करती है।

मैं इसे एक उदाहरण के माध्यम से व्यक्त करना चाहूंगा। सचिन रमेश तेंदुलकर जिन्हें क्रिकेट जगत में अंतर्राष्ट्रीय जगत 'भगवान' का दर्जा देता है। उनके अनुभव को समाज हित में लगाने के लिए तत्कालीन सरकार द्वारा उनका राज्यसभा हेतु नामांकन किया जाता है। किंतु अपेक्षाओं के विपरीत सचिन ने अपने पूरे कार्यकाल में न तो एक भी प्रश्न पूछा और न ही विधायी कार्यों में शिरकत की।

अब अगर हम उपर्युक्त की तुलना राजनीति के अपराधीकरण को दृष्टिगत रखते हुए ऐसे व्यक्ति से करें जो अपनी बाहुबली छवि के सहारे राज्यसभा पहुँचा है और निकृष्ट स्वार्थों की पूर्ति हेतु संपूर्ण सदन की कार्यवाही को बाधित करता है।

तो क्या हमारी सामान्य राय यह होनी चाहिए कि चूँकि इसरे व्यक्ति ने

सदन में शिरकत की है अतः वे समाज हेतु, राष्ट्र के विकास हेतु साचीन से श्रेष्ठ संसाधन है।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुये अभी हाल ही में भारत के कश्मीर में बड़े लीथियम भंडार की प्राप्ति हुयी जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा हेतु क्रांतिक घटना के रूप में देखा जा रहा है। किंतु इसका नकारात्मक पक्ष यह है कि लीथियम का निष्कर्षण विशाल जलराशी का अपव्यय करता है। अतः अब क्या हम यह कह पायेंगे कि इसकी एक कमी की वजह से इसका मूल्य उन अनेक पत्थर रूपी संसाधनों से कम हो गया जो जल का अपव्यय नहीं करते।

बिना किसी कमी के पत्थर से आशय अर्थात वह संसाधन जो उपयोग में नहीं आ सकता; जो गुणों से संपन्न नही है। अब चूँकि पत्थर गुणों से समृद्ध नहीं है तो उसमें अवगुणों की अनुपस्थिति भी स्वाभाविक है।

गिरते हैं शहसवार ही मैदान-ए-जंग में
वो तिफ्ल क्या गिरे जो घुटनो के बल चले

क्या वह स्कुल काम्य नहीं है जो विज्ञान के प्रयोग या मानविकी में शोध तो करता हैं किंतु कुछ बुनियादी गलतियों के कारण बार-बार असफल हो जाता है। क्या आप उस विद्यालय को श्रेष्ठ मानेंगे जो असफलता से बचने के लिये प्रयोगो को प्रारंभ ही नहीं करता?

चूंकि हमने यह पहले ही देखा है कि बिना किसी कमी के हीरा होना आदर्श है और आदर्श स्वयं में अप्राप्य है। एक व्यक्ति की महानता में उसके निजी क्षमताओं के साथ साथ समाज के इनपुट का भी योगदान होता है।

एक राजनेता, सफल प्रशासक, उत्कृष्ट खिलाडी बनने व प्रभावी समाज सुधारक आदि बनने में हीरे के समान ही ताप व दाब को सहना पड़ता है, अर्थात सूरज जैसा बनने के लिये सूरज जैसा तपना पड़ता है।

यह नितांत स्वाभाविक है कि इस तपन में कुछ ग्रहण भी लग जाये। नियोक्ताओं को सर्वोत्तम का चयन करने में प्रायः एक सामान्य दुविधा का सामना करना पड़ता है-

साक्षात्कार में आये ऐसे दो व्यक्तियों में से एक का चयन जो कार्य संपादन के लिये आवश्यक दक्षताओं से संपन्न है किंतु उसमें समयबद्धता का अभाव है। तथा दूसरी प्रत्याशी जो सामान्य रूप से कमीविहीन प्रतीत होती है किंतु आवश्यक कार्य दक्षता में प्रथम प्रतिभागी से निर्णायक रूप से कमजोर है।

अर्थात एक उस हीरे के समान है जो तप कर, गल कर निकली है किंतु कमी विहीन नहीं है तथा दूसरी प्रतिभागी कमी विहीन तो है किंतु पहली के मुकाबले पत्थर के समान है।

यह कहने की जरूरत नहीं है कि अधिकांश सफल व अनुभवी नियोक्ता प्रथम प्रतिभागी को वरीयता देंगे।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

यह समझ लेने के पश्चात कि अधिकांश मामलों में एक दो कमियों के साथ हीरा बिना किसी कमी के पत्थर से बेहतर हो सकता है। इससे स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि किन कमियों को स्वीकारा जा सकता है?

इसका एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं हो सकता यह समय व स्थान के सापेक्ष ही निर्धारित किया जा सकता है। यथा हनुमान जी के अंदर व्याप्त आवेग ने उनकी रामभक्ति व सेवा को कहीं से कमजोर नहीं किया।

पाण्डवों के प्रति संवेदना होने के बावजूद कौरव सेना के प्रधान सेनापति भीष्म व द्रोणाचार्य ही थे और यह उनके न्यायपूर्ण कर्तव्य निष्पादन के आडे भी नहीं आया।

अर्थात किसी व्यक्ति, संसाधन की असीम संभावनाओं, उपयोगिता को देखते हुये उसके कुछ अवगुण नजरअंदाज

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किये जा सकते हैं; बशर्ते वे अवगुण व्यक्ति की उस संभावना, उपयोगिता को ही कम करने वाले न हों। साथ ही हीरे की ऐसी कमियाँ समाज के व्यापक मूल्यों के विपरीत न हो; उनसे सामाजिक व राष्ट्रीय हित न बाधित होता हो।

उदाहरणस्वरूप भले ही कोई वैज्ञानिक समय का पाबंद नहीं है या प्रोफेशनल व निजी जिंदगी में संतुलन स्थापित नहीं कर पाता किंतु अगर वह सत्यनिष्ठ है, समाज हित हेतु प्रतिबद्ध है तो वह उन कमियों को नजरअंदाज करने या सुधारने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

यहाँ पर यह भी विचारणीय है कि कभी कभी ऐसी परिस्थितियाँ भी बनती हैं जब हीरे को त्यागना पड़ता है व पत्थर से ही काम लेना पड़ता है। क्योंकि अपने आप में हीरा साध्य नहीं है वह सिर्फ राष्ट्रीय प्रगति व व्यक्ति – समाज के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उत्थान का माध्यम है।

हनीट्रैप में फँसा हुआ सेना का जवान भले ही कितनी बार सफल ऑपरेशनों का नायक रह चुका हो ; भ्रष्टाचार में लिप्त सरकारी कर्मचारी ; व्यक्तिगत हितों के लिए खेल नैतिकता का उल्लंघन करने वाला राष्ट्र का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हीरा होकर भी पत्थर से निम्नतर है।

गांधी जी ने अपने सात पापों के सिद्धांत में यह मार्गदर्शित किया था कि उपर्युक्त कमी से युक्त सर्वश्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ संसाधन भी जहर के समान त्याज्य है ; फिर चाहे राष्ट्र को पत्थरों से ही क्यों न अपनी नींव रखनी पड़े।

उपर्युक्त चर्चा को आगे बढ़ाते हुये हमें देखना समझना होगा कि आज हम प्रयोगशाला निर्मित हीरों को प्राप्त करने में समर्थ हैं तो क्या हम हीरे के इन अवगुणों को खत्म नहीं कर सकते ?

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हमारी प्रकृति सुंदर भी है तो आपदाओं के रूप में विनाशकारी भी ; उसमें गुलाब की महक है तो कुकुरमुत्ता की गंध भी। कहने का आशय है कि भले ही कृत्रिम हीरे में अवगुणों को समाप्त किया जा सके ; उसे हम मनचाहा मनचाहा आकार दे सकें। किंतु व्यक्ति स्वाभाविक है लोंजाइनस को पुनः याद करें तो बड़ी से बड़ी महानता में कुछ छिद्र रह ही जाते हैं।

किंतु हम प्रगति करते आये हैं, मानव जीवन निरंतर प्रगति का विकास का साधन है। अतः हमें परिवार, विद्यालय, समाज के स्तर पर मूल्यों का ऐसा ढाँचा विकसित करना चाहिए कि वह स्पष्ट हो। वह व्यक्ति के समाजीकरण में यह सुनिश्चित करने में समर्थ हो कि भले ही हीरे में एक दो कमियाँ मौजूद हों किंतु ये कमियाँ हीरे की माँग को ही न कम करने वाली हों।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"पूरी बात को सार रूप में प्रकट किया जाए तो हीरा अंततः एक दो कमियों के बावजूद पत्थर से बेहतर है। कि जैसा अरस्तू ने कहा है कि सभी कमियों के बावजूद व्यक्ति न्याय से युक्त होना चाहिए। वैसे ही हीरे की ये कमियाँ ऐसी न हों कि उसकी उपयोगिता पर ही प्रहार करती हों। हीरा कई कमियों के बावजूद अंततः मूल्य, नैतिकता, सदाचार, सत्यनिष्ठा तथा न्याय से युक्त होना चाहिए।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"वहाँ मत जाओ जहाँ रास्ता ले जाए, बल्कि वहाँ जाओ जहाँ कोई रास्ता नहीं है और अपने निशान छोड़ जाओ।"

तत्कालीन बिहार के एक रेलवे स्टेशन पर एक युवक टिकट जाँचने का कार्य भार संभालता है। यह नौकरी उसकी निम्न मध्यवर्गीय पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार उसे अपने समाज में सफल व्यक्तियों की कतार में खड़ा करती थी। हालांकि यह उसकी प्रतिभा, महत्वाकांक्षा और सपनों के अनुरूप न थी। उसने अपनी नौकरी में प्रत्येक दिन अपनी जिंदगी को रेलगाड़ी की तरह एक नये रास्ते पर जाते देखा किंतु यह वह रास्ता नहीं था जहाँ वह युवक जाना चाहता था। या यूँ कहें उसके सपनों के गंतव्य तक वहाँ से कोई रेलगाड़ी नहीं जाती था। इससे वह युवक निराश नहीं हुआ और वह कार्य समय के पश्चात अपने प्रिय खेल के लिये समय

निकाल ही लेता। और एक दिन आखिर उस युवक ने निश्चित कर ही लिया कि यह मेरा रास्ता नहीं है और उसने अपने खेल के लिये टिकट जाँचने की नौकरी छोड़ दी। आगे चलकर उस युवक ने भारतीय टीम को अपने नेतृत्व में टी-20 वर्ल्ड कप, चैंपियंस ट्रॉफी और क्रिकेट के अनेक कीर्तिमान हासिल करने में मदद की।

महेंद्र सिंह ~~धोनी~~ धोनी की यह कहानी हमारे शीर्षक के मर्म को उद्घाटित करती है कि अपने गंतव्य के अनुरूप रास्ते का निर्माण करो न कि रास्ते के अनुरूप गंतव्य का चुनाव।

अब जब हम अपने शीर्षक के मर्म को समझ चुके हैं तो हमें इसका गहन विश्लेषण भी करना होगा। हमें यह समझना होगा कि जहाँ कोई रास्ता नहीं है वहाँ तक कैसे जाया जा सकता है? और क्या वहाँ जाना सर्वथा फलदायी होता है? यह भी समझना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

होगा कि क्या हमेशा हमें पारंपरिक रास्तों की उपेक्षा करनी चाहिए या कभी कभी सदियों से बना हुआ रास्ता भी पथप्रयोग्य होता है ?

आगे के क्रम में हम इन प्रश्नों का उत्तर तो पा जाएंगे किंतु उससे पहले यह समझ लेते हैं कि रास्ता क्या होता है ? एक रास्ता तो वह है जो परिवहन का मार्ग होता है अर्थात हमारे घर से हमारे कार्यालय तक का मार्ग या व्यापक स्तर पर न्यूयार्क से लंदन तक का समुद्री रास्ता या श्री हरिकोटा प्रक्षेपण स्थल से चंद्रमा तक का रास्ता ।

रास्ते का यह अर्थ अपनी प्रकृति में अत्यंत स्थूल है । रास्ता सिर्फ वह नहीं है जो दो गंतव्य स्थलों को जोड़ता है बल्कि यह उससे कहीं अधिक व्यापक है। महेंद्र सिंह धोनी की ही कहानी के अनुरूप रास्ता हमारे सपनों से हमारे लक्ष्यों तक का मार्ग भी है ; वह भुखमरी की अवस्था से संपन्नता की अवस्था तक

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पहुँचने का दृष्टिकोण भी है। रास्ता हमारे जन्म से लेकर हमारी मृत्यु तक की यात्रा का भौतिक रूप भी है।

रास्ते की प्रकृति को समझ लेने के पश्चात हमें अपने प्रश्नों की ओर लौटना चाहिए। जहाँ कोई रास्ता नहीं है, हमें वहाँ क्यों जाना चाहिए? इसकी अत्यंत सारगर्भित समझ यह है कि जहाँ वर्तमान में कोई रास्ता नहीं है, वहाँ एक रास्ता होने की संभावना निहित है। और हमें यह भी समझना होगा कि सृष्टि के आरंभ में पहले से बना बनाया कोई मार्ग नहीं था। यह हमारे पूर्वज ही थे जो नये नये रास्तों का निर्माण किये और वे आज भी उनके उद्यम से प्रज्वलित हैं।

हालांकि मानवीय सभ्यता प्रगति का द्योतक है और इस प्रगति, विकास के क्रम में हमारे पूर्वजों द्वारा बनाये गये रास्ते कभी-कभी नयी जरूरतों, हमारी महत्वाकांक्षाओं को पूरा नहीं कर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

...ना रहे होते हैं।
इसका सर्वोत्तम उदाहरण भारत तथा यूरोप के मध्य महाद्वीपीय रास्ता है। 15वीं सदी में कुस्तुनतुनिया पर इस्लाम का आधिपत्य हो जाने पर यूरोप के लिये भारत तक सीधी पहुँच बंद हो गयी। इस स्थिति में जहाँ अधिकांश यूरोपीय राष्ट्रों ने तुर्क आधिपत्य को स्वीकार कर लिया तो वहीं कुछ दुस्साहसी नाविकों ने भारत के लिये समुद्र मार्ग से नये रास्ते की खोज कर डाली।

वास्को डि गामा ने 1498 में रास्ते पर यात्रा करके, अपनी साहसी यात्रा के माध्यम से भारत तक यूरोप को नयी पहुँच प्रदान की। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी साहसिक यात्राओं से नये रास्तों का निर्माण किया और उन रास्तों पर उनके निशान हमें उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं। इसीलिये कहा भी गया है कि-

सागर की अपनी क्षमता है
पर मांझी भी कब थकता है
जब तक सांसों में स्पन्दन है
उसका हाथ नहीं रुकता है।
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार॥

यह तो हम जान चुके हैं कि हमें नये रास्ते की ओर क्यों जाना चाहिए किंतु यह समझना बाकी है कि हम नये रास्ते की ओर जा कैसे सकते हैं। विद्यार्थी जीवन से ही हमें समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान यह सिखाया जाता है कि हमारी सफलता के मानक क्या होंगे? हम से अपेक्षा की जाती है हम समाज के स्थापित नियमों, कानूनों, मान्यताओं का सम्मान करेंगे, भले ही वह अप्रतिगामी क्यों न हो।

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजा राम मोहन राय को भी ये सब सिखाया गया रहा होगा किंतु उन्होंने सामाजिक मान्यताओं को अतार्किक रूप से मानने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की जगह तर्कपूर्ण स्वीकृति देने का रास्ता चुना। उन्होंने सती प्रथा, बालविवाह, कन्या भ्रूण हत्या को मानवता के खिलाफ अपराध माना। यहाँ पर साहस, अपने दृढ़ विश्वास तथा शुभ की इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने अपना नया रास्ता बनाया और इन कुप्रथाओं का दृढ़ विरोध किया।

महेंद्र सिंह धोनी या अन्य खिलाड़ी जैसे रोनाल्डो, मेसी आज हमें नये रास्ते के अग्रदूत प्रतीत होते हैं तो यह सिर्फ इस वजह से कि उनमें असफलता का सामना करने का साहस था। अर्थात यदि हमारे अंदर अपने सपनों पर विश्वास, तार्किकता, प्रगामी मूल्य तथा असफलता व आलोचना को स्वीकार करने का साहस है तो हम समाज को एक नया रास्ता दिखा सकते हैं।

यहाँ यह भी ध्यातव्य भी है कि नया रास्ता हमेशा नया नहीं होता बल्कि कभी कभी वह वही पारंपरिक रास्ता होता है जिस पर स्वार्थ या भय वश लोग चलना बन्द कर देते हैं।

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ न लिखें)

भारतीय आंतरिक आपातकाल (1975-1977) के दौरान जस्टिस खन्ना ऐसे ही व्यक्ति थे। जस्टिस खन्ना ने तत्कालीन सरकार की असंवैधानिक नीतियों का विरोध किया। यह कोई नया रास्ता नहीं था. यह वही रास्ता था जो हमारे संविधान ने न्यायपालिका को दिखाया था। अंतर यह था कि लोग इस पर चलना भूल गये थे।

एक प्रश्न और विचारणीय है कि हमें वहाँ क्यों नहीं जाना चाहिए जहाँ हमें रास्ता ले जाता है? इस पर मेरी समझ यह कहती है कि पहला तो वह रास्ता कई मायनों में नयी पीढ़ी की जरूरतों के अनुरूप नहीं होता। यथा आज कोयले व जीवाश्म ईंधनों पर आधारित ऊर्जा का रास्ता हमें विकास के गंतव्य की जगह विनाश के गंतव्य की ओर ले जाएगा। ~~इसस~~ दूसरा कारण यह हो सकता है कि पुराना रास्ता संतृप्त हो गया होता है।

हमारा समाज एक समष्टि है जो अनेक व्यष्टियों से मिलकर बनता है। हम में से प्रत्येक से यह अपेक्षित होता है कि हम उसमें योगदान करेंगे न कि सिर्फ उसका दोहन। इस लिये भी कहा जाता है कि वहाँ जाओ जहाँ कोई रास्ता नहीं है।

साथ ही समय के साथ रास्ते में कुछ कुप्रथाएँ, रूढ़िवादिता भी आ जाती है जिनका सामना नये रास्ते के माध्यम से ही संभव है। महात्मा गांधी ने यदि हरिजनसेवा का नया रास्ता नहीं चुना होता तो अस्पृश्यता का रास्ता शायद आज भी विद्यमान होता है।

अभी तक की संपूर्ण चर्चा में हमारा ध्यान इस पर अधिक रहा है कि स्वयं का रास्ता बनाओ जैसे कि दशरथ माँझी ने बनाया, जैसे कि राम की वानर सेना ने बुराई का दमन के लिये समुद्र को चीर कर अपना रास्ता बनाया। इस स्वयं के रास्ते के चुनाव

में एक विचारणीय मुद्दा यह भी है कि क्या बने बनाये रास्ते पर कभी नहीं जाना चाहिए ? क्या हमेशा स्वयं के रास्ते का निर्माण करना चाहिए ?

द्रष्टव्य है कि हम जो रास्ता बनाते हैं वे हमारे साथ ही नहीं चला जाता वह हमारे बाद भी अपनी सत्ता बरकरार रखता है। श्रीमद्भगवतगीता द्वारा सुझाया गया कर्म का रास्ता आज भी प्रासंगिक है। गांधी की अहिंसा का पथ, बुद्ध का करुणा का मार्ग, आइंसटीन का वैज्ञानिक सोच का रास्ता आज भी चलने योग्य है। यहाँ तक कि हमें आज इन रास्तों की सर्वाधिक आवश्यकता है।

इस प्रकार अपने प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि रास्ता भले ही हमें ले जा रहा हो, या रास्ता कितना भी पुराना क्यों न हो यदि वह मानवता के गंतव्य तक जाता है और प्रगतिशील मूल्यों को

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

धारण करता है तो हमें उस पर चलने में संकोच नहीं करना चाहिए।

अभी तक के संपूर्ण विश्लेषण को सार रूप में रखा जाए तो हम यह पाते हैं कि इस समष्टि के प्रत्येक अंग की अलग अलग आवश्यकताएँ हैं। यह सदैव संभव नहीं होता कि समाज में बनी हुयी लीक पर चलकर व्यक्ति अपनी प्रतिभा के साथ न्याय कर सके। नवोन्मेषिता सभ्यता की प्रगति का आधार है, उसमें जब साहस तथा पुरुषार्थ जुड़ जाता है तो हमें धोनी व वास्कोडिगामा प्राप्त होते हैं जिनकी हर समाज को आवश्यकता होती है। और इसीलिए यह कहा भी गया है कि-

"लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।"

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना.